अध्याय – चतुर्थ

आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

अध्याय – चतुर्थ

आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

संग्रहित समंकों का सारणीयन विश्लेषण तथा प्रस्तुतिकरण आदि अनुसंधान कार्य का महत्वपूर्ण अंग है जिसे प्रयुक्त किये बिना शोध कार्य को विधिवत प्रस्तुत करना संभव नहीं है। इस अध्याय में शासकीय कन्या विद्यालय एवं शासकीय सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के उद्देश्य से एकत्रित किये गये आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण करते समय अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निष्कर्ष निकाले गये हैं।

परिकल्पना क्रमांक 1

शासकीय कन्या विद्यालय एवं शासकीय सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक 4.1

शा.क.वि. तथा शा.सह शिक्षा वि. की बालिकाओं का समायोजन स्तर

S.N.	Group	No.	V.	(M)	σ	"t"
1.	शा.क.वि.	50	समायोजन	43.16	2.77	6.22**
2.	शा.सह–शिक्षा वि.	50	समायोजन	39.8	2.82	

** टी–मान 0.01 स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या :

मुक्तांश 98 पर सारणी टी का मान 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.63 है प्रस्तुत तालिका में टी–मूल्य 6.22 है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.1 को देखने से स्पष्ट होता है कि चयनित शासकीय कन्या विद्यालय की बालिकाओं का सामाजिक समायोजन

स्तर का मध्यमान 39.8 है व मानक विचलन 2.77 है। चयनित शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं का सामाजिक समायोजन स्तर का मध्यमान 43.16 है व मानक विचलन 2.82 है। इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं का एवं शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है। अतः उपरोक्त परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :

शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। तथा शासकीय कन्या विद्यालय की बालिकाओं की अपेक्षा शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं का सामाजिक समायोजन बेहतर है। पूर्व शोध में सुषमा गुप्ता के द्वारा किये गये शोध में भी कन्या विद्यालय की अपेक्षा सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओ का सामाजिक समायोजन ज्यादा अच्छा था।

परिकल्पना क्रमांक 2

शासकीय केन्या विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं एवं सह शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका क्रमांक 4.2

शा.क.वि. एवं शा.सह-शिक्षा वि.की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर

S.N.	Group	No.	V.	(M)	σ	"t"
1.	शा.क.उ.मा.वि.	50	शैक्षिक उपलब्धि	39.1	2.65	6.72**
2.	शा.सह-शिक्षा वि.	50	शैक्षिक उपलब्धि	42.46	2.37	

**टी-मान 0.01 स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या :

मुक्तांश – 98 पर सारणी का मान 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.63 है। प्रस्तुत तालिका में टी–मूल्य 6.72 है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.2 को देखने से स्पष्ट होता है कि चयनित शासकीय कन्या विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर का मध्यमान 39.1 है व मानक विचलन 2.65 है। चयनित शास़कीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि स्तर का मध्यमान 42. 46 है व मानक विचलन 2.37 इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है। अतः उपरोक्त परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष :

शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। तथा शासकीय कन्या विद्यालय की बालिकाओं की अपेक्षा शासकीय सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्यादा अच्छी है। जैसा कि पूर्व शोध में देवगन,श्रुति नारायण और विजयालक्ष्मी तथा श्रीकला द्वारा किये गये शोध में भी कन्या विद्यालय की अपेक्षा सह शिक्षा विद्यालय की बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि ज्यादा बेहतर थी।

परिकल्पना क्रमांक 3

छात्राओं के सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह संबंध नहीं होगा।

तालिका क्रमांक 4.3
छात्राओ का
सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध का स्तर

S.N.	Group	No.	r.
1.	सामाजिक समायोजन	50	0.38
2.	शैक्षिक उपलब्धि	50	

व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक 4.3 से स्पष्ट होता है कि छात्राओं का सामाजिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। और सह संबंध 0.38 है। अतः उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष :

बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक समायोजन में सार्थक सह संबंध पाया गया। अतः बालिकाओं का सामाजिक समायोजन अच्छा होने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होगा। जैसा कि पूर्व शोध में भावेश दुबे और सुभाश द्वारा किये गये में पाया गया कि बालिकाओं का सामाजिक समायोजन अच्छा होने पर उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी उच्च होता हैं।